

lR; opu

Ákxke u- 329

: r & 4%6&22

: r 4%6 में हम पढ़ते हैं,

“उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, मैं उसको छुड़ा नहीं सकता, ऐसा न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिये मेरा छुड़ाने का अधिकार तू ले ले, क्योंकि मैं छुड़ा नहीं सकता।”

मैं यह मानता हूँ कि यह दूसरा कुटुम्बी पहले ही विवाहित था। यह भी सम्भव था कि उसके पुत्र बोअज़ की आयु के रहे हों और उनका भी विवाह हो गया हो। उसकी सम्पत्ति का बँटवारा भी हो गया होगा। फिर एक मोआबिन से विवाह करके उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति खतरे में पड़ सकती थी। वह रूत से विवाह करके और उसे यहोवा की सभा में लाकर अपना सब कुछ खतरे में डालेगा। अतः उसने स्पष्ट कह दिया कि वह न तो भूमि को और न ही रूत का छुड़ानेहारा बनना चाहता क्योंकि उसकी अपनी विरासत धूमिल हो जाएगी और वह ठीक ही कह रहा था। अतः उसने बोअज़ से कहा कि वह उसका छुड़ाने का अधिकार स्वीकार करे और आगे बढ़ जाए।

मैं ने इस छोटी सी पुस्तक से कुछ महान आत्मिक शिक्षाएँ खोजी हैं — शिक्षाएँ तो इसमें अनेक हैं। कुटुम्बी छुड़ानेहारा हमारे प्रभु यीशु मसीह का एक अति उत्तम चित्रण है — उसने हमें छुड़ाया। हम आरम्भ में ही कह चुके हैं कि यह कहानी हमारे उद्धार का परिदृश्य प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार हमारे कुटुम्बी छुड़ानेहारे ने हमारे पक्ष में काम किया।

इस दूसरे कुटुम्बी में भी हमें कुछ देखने को मिलता है। वह किसका प्रतिनिधित्व करता है? मेरे अपने विचार में वह मूसा की व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। पहले तो, उसका नाम नहीं दिया गया है। व्यवस्था हमें मुक्ति नहीं दिला पाई थी क्योंकि व्यवस्था के लिए यह असम्भव था। नये नियम में यह स्पष्ट व्यक्त है। रोमियों अध्याय 3 पद 20 में पौलुस कहता है, “क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा

पाप की पहचान होती है।" व्यवस्था मुक्ति के लिए नहीं थी। व्यवस्था तो इसलिए दी गई थी कि वह मनुष्य की वास्तविक दशा प्रगट कर दे। 2 कुरिन्थियों 3:9 में पौलुस उसे "दोषी ठहरानेवाली वाचा" और 3:7 में "मृत्यु की वह वाचा" कहता है। अतः व्यवस्था मुक्तिदाता कदापि नहीं थी। व्यवस्था ने तो वास्तव में हमें मुक्त कराने की अपेक्षा दोषी ठहराया। वह तो केवल पुराने स्वभाव को वश में रखने का प्रयासमात्र था। व्यवस्था के आदेशों का पालन करके एक भी मनुष्य ने उद्धार नहीं पाया था। यह केवल बलियों के द्वारा, जो मसीह की ओर संकेत करती थीं, वे परमेश्वर को ग्रहणयोग्य थे। यही कारण था कि मेल का वह महान दिवस ऐसा महत्वपूर्ण था। उस दिन ने, इस्राएल में प्रत्येक जन के अज्ञान के पाप को ढाँक दिया था। उस दिन उनका ध्यान उस सत्य की ओर आकर्षित किया गया था कि उन्हें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है कि व्यवस्था से भी उन्हें मुक्ति प्राप्त हो। इस दूसरे कुटुम्बी की नई व्यवस्था मुक्तिकार्य में अक्षम ठहरी थी। उस कुटुम्बी ने कहा कि ऐसा करने से उसकी विरासत भी संकट में पड़ जाएगी। मित्रों यदि व्यवस्था हमें मुक्ति दिला सकती तो उसे अपने स्तर से गिरना पड़ता। मैं अनेकों से मूर्खता भरी बातें सुनता हूँ कि हमें व्यवस्था पालन करना चाहिए। वे कहते हैं, "मैं दस आज्ञाओं का पालन करता हूँ।" या "मैं पर्वतीय उपदेश के आधार पर जीवन जीता हूँ।" क्या आप भी ऐसा ही करते हैं? कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं, "यही मेरा धर्म है।" यदि ऐसा है तो आपसे पूछता हूँ, "आपका निर्वाह कैसे हो रहा है? क्या आप उनका पालन करते हैं?" वे कहते हैं, "ओह! हम कठोर परिश्रम कर रहे हैं।" आप न तो पर्वतीय उपदेश में, न ही दस आज्ञाओं में और न ही मूसा की व्यवस्था में प्रयास करने का प्रावधान देखते हैं। परमेश्वर सीधा कहता है, "यह कर।" वह वचन में कहीं भी प्रयास का नाम नहीं लेता है। आप आधा काम नहीं कर सकते हैं। यह दूसरा कुटुम्बी जो व्यवस्था का प्रतीक है, स्पष्ट कहता है, "मैं नहीं छुड़ा सकता।" व्यवस्था आपको मुक्ति नहीं दिला सकती। मेरे मित्रों, आपको किसी प्रेमी की आवश्यकता है। किसी की आवश्यकता है जो पापों का दण्ड चुकाए। आप केवल इसी रीति से मुक्ति पा सकते हैं। आप परमेश्वर के मानदण्ड में सिद्ध कभी नहीं उतरेंगे। आप और मैं परमेश्वर के मानदण्ड से बहुत नीचे हैं। आज हमें एक कुटुम्बी मुक्तिदाता की आवश्यकता है जो हमसे प्रेम करता है जो अपनी सम्पदा जोखिम में डाले वरन् अपनी जान ही दे दे। जब उसने हमारा स्थान लिया तब उसने भयंकर दण्ड भोगा। वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मर गया।

किसी वाचा को लागू करने के लिए एक असामान्य प्रक्रिया से जाने की आवश्यकता थी।

: r 4:7 में हम पढ़ते हैं,

“पुराने समय में इस्राएल में छुड़ाने और बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिये यह प्रथा थी, कि मनुष्य अपनी जूती उतार के दूसरे को देता था। इस्राएल में प्रमाणित इसी रीति से होता था।”

आपको स्मरण होगा कि हमने यह नियम व्यवस्थाविवरण अध्याय 25 में देखा था कि स्त्री उसका जूता उतरवाएगी और उसके मुँह पर थूकेगी। मैं खुश हूँ कि बोअज़ ने उसके मुँह पर नहीं थूका परन्तु उसके जूते अवश्य उतरवा लिए। यहाँ हम देखते हैं कि बोअज़ रूत की भूमिका निभा रहा है। उसकी ओर से वह उसके जूते उतरवा लेता है। अब रूत उसकी पत्नी बन सकती है। मैं ने इस छोटी पुस्तक में सबको नाम दिए हैं और इस दूसरे कुटुम्बी का नाम भी मेरे पास है, वृद्ध नंगा पाँव। उसने अपने जूते खो दिए। आप तो जानते हैं कि सुसमाचार हमारे नंगे पाँवों में जूते पहनाता है। इफिसियों अध्याय 6 पद 15 में लिखा है, “पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर...” मेरे मित्रों, व्यवस्था नंगे पाँव है। उसमें उद्धार की क्षमता नहीं।

: r 4:8&10 में हम पढ़ते हैं,

“इसलिये उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने, बोअज़ से यह कहकर, तू उसे मोल ले, अपनी जूती उतारी।

तब बोअज़ ने वृद्ध लोगों और सब लोगों से कहा, “तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूँ।

फिर महलोन की स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं अपनी पत्नी करने के लिये इस विचार से मोल लेता हूँ, कि मरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्थिर करूँ, कहीं ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक से मिट जाए; तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो।”

पहले उसने भूमि छुड़वाई, तब वह रूत छुड़ानेहारा बना। वह कुटुम्बी का उत्तरदायित्व निभा रहा था। उसने रूत को अपनी पत्नी बना ही लिया। वह ऐसा करने को तैयार था क्योंकि वह रूत से प्रेम करता था। क्योंकि बोअज़ हमारे कुटुम्बी मुक्तिदाता यीशु का चित्रण प्रस्तुत

करता है, यह अति महत्वपूर्ण है कि हम जानें कि उसने हमारे पक्ष में काम किया। अब बोअज़ गवाहों को एकत्र करता है कि वे साक्षी उठें कि उसने भूमि ही नहीं महलों की विधवा, रूत को भी छुड़ा लिया है।

: r 4%11 में हम पढ़ते हैं,

“तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्होंने और वृद्ध लोगों ने कहा, हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा इस्राएल के घराने की दो उपजानेवाली राहेल और लिया : के समान करे। और तू एप्राता में वीरता करे, और बैतलहम में तेरा बड़ा नाम हो।”

बैतलहम के निवासी आनन्दित थे क्योंकि दो बार हमें कहा जा चुका है — इस परदेशी युवती ने बैतलहम में अपनी प्रतिष्ठा बनाई थी। यह तो प्रगट है कि उसने एक मोआबी होते हुए परमेश्वर को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करने में बड़ा बलिदान किया था। उसने युवकों के पीछे भागने में अपना समय नहीं गँवाया था। आपको स्मरण होगा कि बोअज़ ने इस बात पर ध्यान दिया था।

आज कुछ लड़कियों को देख ऐसा प्रतीत होता है कि परिपक्व आयु में आते ही वे लड़कों के पीछे भागती हैं और जब तक किसी एक से विवाह न कर लें उनका पीछा नहीं छोड़ती हैं। और फिर हम सोचने लगते हैं कि उनके विवाहित जीवन सफल क्यों नहीं हैं। यह कहकर मैं पुरानी मानसिकता का कहलाने का संकट मोल ले रहा हूँ। परन्तु मेरे विचार में लड़कियों के पीछे जाना आज भी लड़कों का ही काम है। पुरुष देनेवाला है और स्त्री पानेवाली है। परमेश्वर ने उन्हें ऐसा ही बनाया है। यही कारण है कि इफिसियों अध्याय 5 पद 25 में आदेश है, “पतियो अपनी अपनी पत्नी से प्रेम करो।” पत्नियों से नहीं कहा गया है कि वे अपने अपने पति से प्रेम करें। अब कोई कहेगा, “क्या उसे अपने पति से प्रेम नहीं करना है?” निश्चय ही उसे प्रेम करना है प्रतिक्रिया में। यदि पति अपनी पत्नी से प्रेम करेगा तो वह निश्चय ही उससे प्रेम करेगी। यदि वह अपनी पत्नी के साथ कठोर व्यवहार करेगा तो वह ठण्डी और उदासीन हो जाएगी। प्रेम का अन्त हो जाएगा। मैं ने वर्षों तक सैंकड़ों विवाहित समस्याओं में परामर्श दिया है और सैंकड़ों दम्पतियों में देखा है कि दोष पति ही का है। वही उत्तरदायी है क्योंकि अगुवाई उसी के हाथ में है।

जिस प्रकार पुरुष अपनी पत्नी को चुनता है और बोअज़ ने भी रूत को स्वीकार किया उसी प्रकार मसीह भी इस संसार में अपनी वधु के लिए आया। उसने हमारे लिए अपनी जान देकर प्रेम का प्रदर्शन किया। हमें प्रतिक्रिया दिखानी है। हमें उसके प्रेम के प्रति प्रतिक्रिया दिखानी है। हमें उसे अपना मुक्तिदाता ग्रहण करके उसके पास आना है। ओह! मेरे मित्रों, प्रत्येक विश्वासी की यही मनोकामना हो कि उसे जानें। यह बड़े दुःख की बात है कि अनेक जन प्रतिवर्ष बैतलहम की यात्रा करते हैं और चरनी को निहारते हैं परन्तु वह वहाँ नहीं है। मेरे मित्रों! यद्यपि वह शिशु रूप में जन्मा परन्तु वह सदैव शिशु ही नहीं रहेगा। इसके बाद वे ईस्टर के दिन खाली कब्र में झाँकते हैं। वह तो वहाँ भी नहीं है। वह महिमामय मनुष्य है। पौलुस ने लिखा है उसकी मनोकामना है — फिलिप्पियों 3:10, “मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ।” पौलुस का यह लक्ष्य था। ओह! कि हम उसे जानें, हमारे कुटुम्बी मुक्तिदाता को और उससे प्रेम करें क्योंकि उसने पहले हम से प्रेम किया।

अब बैतलहम की सम्पूर्ण जनता बोअज़ की इन घटनाओं से आनन्दित थी। वे इसे व्यक्त भी कर रहे हैं।

: r 4%12&14 में हम पढ़ते हैं,

*“और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे
उसके कारण तेरा घराना पेरेस का सा हो जाए, जो तामार
से यहूदा के द्वारा उत्पन्न हुआ।*

*तब बोअज़ ने रूत से विवाह कर लिया, और वह उसकी
पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा
की दया से उस को गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न
हुआ।*

*तब स्त्रियों ने नाओमी से कहा, यहोवा धन्य है, जिसने
तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इस्राएल
में इसका बड़ा नाम हो।”*

वहाँ की स्त्रियों ने नाओमी को यह आशीर्वाद दिया क्योंकि एलीमेलेक का वंश चलाने के लिए उसे एक कुटुम्बी की आवश्यकता थी और अब बोअज़ उस वंश को आगे बढ़ाएगा।

आज हमारे पास भी एक कुटुम्बी है और यह एक महान सुसमाचार है। आज के इस पाप रंजित संसार को देखें। वह पूर्णरूप से विमूढ़ है कि किसकी ओर निहारें। उनके चेहरों को देखें। मैं ने अनेक स्थानों में हजारों चेहरों पर ध्यान दिया है। यदि वे प्रसन्न भी हैं तो उनके चेहरों से आनन्द प्रगट नहीं होता है। बच्चों के चेहरों पर तो प्रसन्नता दिखाई देती है परन्तु वयस्कों के चेहरों पर नहीं। उनके जीवन में न तो कोई आशा, न परमेश्वर की उपस्थिति दिखाई देती है। उन्हें एक कुटुम्बी की आवश्यकता है। यह एक त्रासदी है कि मसीही समुदाय बड़ा दिन, ईस्टर और अन्य उत्सव मनाता है परन्तु नहीं जानता कि वह हमारा कुटुम्बी है और उसे वे अपना मुक्तिदाता भी ग्रहण नहीं करते हैं।

: r 4%15&16 में हम पढ़ते हैं,

"और यह तेरे जी में जी ले आनेवाला और तेरा बुढ़ापे में पालनेवाला हो, क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा है।

फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोद में रखकर उसकी धाय का काम करने लगी।"

यह बालक नाओमी का पोता है और उसके लिए अनमोल है।

: r 4%17 में हम पढ़ते हैं,

"और उसकी पड़ोसियों ने यह कहकर, नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ।"

नाओमी के पड़ोसियों ने उस बच्चे के प्रति नाओमी के आपार प्रेम को देखकर उसका नाम ओबेद रखा। ओबेद का अर्थ है, सेवक या आराधक। यद्यपि उसका नाओमी से लहू का सम्बन्ध नहीं था, वह वैधानिक रूप से उसका पोता था और निःसन्देह वह नाओमी के बुढ़ापे में एक छोटा सेवक बना और उसके पति एवं पुत्रों की मृत्यु द्वारा छोड़े गए रिक्त स्थान को भरा। उसकी भूमि बोअज़ और रूत के इस पुत्र के नाम ही होगी।

वह एक जीवित और सच्चे परमेश्वर का आराधक था।

अब यहाँ ओबेद की वंशावली दी गई है। ओबेद यिशै का पिता हुआ और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ।

: r 4॥18&22 में हम पढ़ते हैं,

“पेरेस की वंशावली यह है, अर्थात् पेरेस से हेस्रोन

और हेस्रोन से राम, और राम से अम्मीनादाब,

और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सल्मोन,

और सल्मोन से बोअज़, और बोअज़ से ओबेद,

और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ।”

एक प्रकार से यह वंशावली पुराने नियम के किसी भी अंश के तुल्य महत्वपूर्ण है। क्या आप जानते हैं क्यों? क्योंकि यह पुस्तक और यह वंशावली राजा दाऊद को यहूदा के गोत्र से जोड़ते हैं। इसके बिना हमारे पास इस सम्बन्ध में अन्य लिखित ब्योरा नहीं होता। यही कारण है कि रूत की यह छोटी सी पुस्तक ऐसी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर की योजना और परमेश्वर के कार्यों में संयोजित होती है।

रूत की पुस्तक की परिकाष्ठा के निमित्त हम कुटुम्बी छुड़ानेहारे के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करेंगे क्योंकि वह प्रभु यीशु मसीह का चित्रण प्रस्तुत करता है। हमारे प्रभु यीशु ने कुटुम्बी छुड़ानेहारे का प्रतिनिधित्व कैसे किया? कुटुम्बी छुड़ानेहारा होने के लिए पुरुष को अनेक अनिवार्यताएँ पूरी करनी होती थीं। हम उन पर ध्यान देंगे।

पहली, उसे निकट कुटुम्बी होना था। दूसरी, उसे छुड़ाने के लिए तैयार होना होता था। तीसरी, कुटुम्बी छुड़ानेहारे को सक्षम भी होना था। चौथी, कुटुम्बी छुड़ानेहारे को स्वयं भी मुक्त होना था। पाँचवी, उसके पास छुड़ौती का धन होना था। बोअज़, रूत का कुटुम्बी छुड़ानेहारा इन सब शर्तों को पूरा करने में सक्षम था। और प्रभु यीशु हमारा वरन् संसार का कुटुम्बी छुड़ानेहारा भी इन शर्तों को पूरा करने में सक्षम था।

अतः हम देखेंगे कि पहले उस कुटुम्बी छुड़ानेहारे को निकट कुटुम्बी होना था। यह प्रगट ही था। अतः इसमें प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यही कारण था कि बोअज़ आगे की भूमिका निभा पाया। उसने कहा था, “मैं तेरा निकट कुटुम्बी हूँ।” यह आरंभ से अन्त तक स्पष्ट किया

गया है कि बोअज़ एलीमेलेक का कुटुम्बी था। प्रभु यीशु मसीह हमारा निकट कुटुम्बी है। वह हमारा कुटुम्बी छुड़ानेहारा है। उसने मनुष्यत्व धारण किया। इब्रानियों अध्याय 2 पद 14-16 में लिखा है, "इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले। क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को सम्मालता है।" प्रभु यीशु मसीह हमारे मानव परिवार में आया और यहाँ लिखा है कि वह अब्राहम के वंश से है। इब्रानियों अध्याय 5 पद 2 में हमें कहा गया है, "वह अज्ञानों और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है, इसलिये कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है।" वह जानता था कि मनुष्य होना क्या है। गलातियों अध्याय 4 पद 4-5 में व्यक्त है, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।" वह स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ था। वह आया और मनुष्यत्व धारण किया। वह पुरुष बना। और यह उस आनन्द के निमित्त था जो उसके आगे रखा था कि वह इस पृथ्वी पर मानव देह में आया। मेरे मित्रों, यह मेरा आज एक महान प्रोत्साहन है। यदि आप मुझे यह विश्वास दिलाएँ कि परमेश्वर मनुष्य नहीं बना जो आप करने में सफल नहीं होंगे परन्तु यदि आप प्रयास करें तो मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ और सोच समझकर कहता हूँ कि मैं परमेश्वर से विमुख हो जाऊँगा। तथापि आप मुझे यह विश्वास नहीं दिला सकते हैं। और मैं परमेश्वर से विमुख नहीं हो सकता क्योंकि 2000 वर्ष पूर्व वह इस पृथ्वी पर आया था और उसने मेरा मनुष्यत्व अपनाया और यहां उसने कष्ट उठाया। उसने लहू बहाया और जान दी। आज वह हमारी सहायता करने में सक्षम है क्योंकि वह आपको जानता है और मुझे जानता है। वह आपको आपके मित्रों से अधिक अच्छा जानता है, आपके संबंधियों से अधिक अच्छा जानता है, आपकी पत्नी या पति से अधिक अच्छा जानता है। वह तो आपको आप से भी अच्छा जानता है। वह आपको आज जानता है और यही कारण है कि वह आज आपकी सहायता करने में सक्षम है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य बना और मेरी मानव देह धारण की इसलिए मैं इस जीवन के अनेक अवर्णित अनुभवों और कारणों को जाने बिना उसे ग्रहण कर सकता हूँ। वह मानव बना और उसने यह आवश्यक समझा कि इस पृथ्वी पर आए और संसार के पापों के कारण कष्ट उठाए, लहू बहाए और जान दे। यह परमेश्वर की योजना और कार्यों में था। अतः मैं जानता हूँ कि जीवन में उच्च और पवित्र उद्देश्य हैं। मैं गिरकर भी उठूँगा और जीवन से होता हुआ आगे बढ़ूँगा क्योंकि हम जानते हैं कि हम आगे बढ़ रहे हैं जैसा पौलुस

फिलिप्पियों 3:14 में कहता है, “निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।”

मध्यकालीन युग से पूर्व के एक संत एनसल्म ने अपनी पुस्तक, कर डयूस होमो अर्थात् परमेश्वर क्यों मनुष्य बना, में लिखते हैं, “मुक्ति” के कारण अर्थात् उसने हमारी देह धारण की कि हमारा कुटुम्बी मुक्तिदाता हो। वह हमारा निकट कुटुम्बी है।

अब छुड़ानेहारा निकट कुटुम्बी ही न हो, उसमें छुड़ाने की इच्छा भी होना है। आपको स्मरण होगा कि नाओमी का वह दूसरा कुटुम्बी छुड़ाने के लिए तैयार नहीं था। उसने बोअज़ से कह दिया था, “मैं अपनी सम्पत्ति खतरे में नहीं डाल सकता। अतः मेरा अधिकार तू ले ले।” बोअज़ रूत से प्रेम करता था इसलिए वह उसे छुड़ाना चाहता था। आपके और मेरे पास एक कुटुम्बी है जो हमसे प्रेम करता है। क्यों? हम में तो इसका उत्तर व्याप्त नहीं है। रोमियों 3:24 में पौलुस कहता है, “उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंट-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।” सेंट-मेंत अर्थात् बिना किसी कारण। उसने हम में ऐसा कोई कारण नहीं देखा कि हमें धर्मी ठहराए। वह हमसे प्रेम करता है और हमें छुड़ाने की इच्छा रखता है। इब्रानियों अध्याय 12 पद 2 में लिखा है, “विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।” अतः स्पष्ट है कि हमारा कुटुम्बी छुड़ानेहारा, प्रभु यीशु हमें छुड़ाना चाहता था। वह हमसे प्रेम करता है और वह बलिदान के लिए तैयार है।

कुछ लोगों का यह कहना उचित नहीं कि वह बलि के लिए तैयार था अतः उसने सुकरात के समान आत्महत्या की। यह निन्दा करना है। उसकी मृत्यु आत्महत्या तो नहीं थी परन्तु वह निश्चय ही मरने के लिए तैयार था। क्योंकि वह हमसे प्रेम करता था।

एक बार एक छात्रावास में आग लग गई। एक स्त्री सीमा पार करके उसमें प्रवेश कर गई और उस घर के साथ जलकर भस्म हो गई। समाचार पत्रों में उसके लिए सुखियों में था, “बेचारी अभागन दीएस; आत्महत्या!” बाद में उस समाचार पत्र ने क्षमा माँगी। क्यों? क्योंकि जब वहाँ से मलबा हटाया जा रहा था तब वहाँ एक लोहे के पलंग पर एक शिशु था। वह उसका शिशु था जिसे बचाने के लिए वह आग में कूद पड़ी थी। उसने आत्महत्या नहीं की थी। वह उस

शिशु को बचाना चाहती थी। इसी प्रकार मसीह यीशु छुड़ाने की इच्छा रखता था क्योंकि वह हमसे प्रेम रखता है।

तीसरी शर्त, कुटुम्बी छुड़ानेहारा सक्षम हो। मुझे पूरा विश्वास है कि बैतलहम में नाओमी के गरीब संबंधी भी थे जैसे हमारे भी हैं। जिस दिन नाओमी लौटकर आई थी वे सब उसके पास आए होंगे और रोए होंगे। उन्होंने कहा, “नाओमी हमें तुम्हारा बहुत दुःख है परन्तु हम तेरी सहायता करने में सक्षम नहीं हैं। हम तो स्वयं ही कंगाल हैं। हम तो अपनी ही सहायता में अयोग्य हैं।” सहानुभूति रखनेवालों का होना तो अच्छा है परन्तु ऐसा कुटुम्बी होना जो पैसा दे वह और भी अच्छा है और हमें छुड़ा ले। आपके और मेरे पास एक कुटुम्बी मुक्तिदाता है जिसके बारे में कहा गया है कि वह मुक्ति दिलाने में एकमात्र सक्षम है। आपने ध्यान दिया होगा कि नये नियम में यीशु के लिए अनेक बार कहा गया है कि वह इस योग्य है। देखिए इब्रानियों अध्याय 7 पद 25 में क्या लिखा है, “इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।” वह हमारा महान छुड़ानेहारा है जो पूरा पूरा उद्धार कर सकता है – वह सक्षम है। बोअज़ के लिए भी यह सच ही था। उसे अति धनवान कहा गया है। उसकी योग्यता पर उंगली उठानेवाला कोई नहीं था। और मेरे मित्रों, प्रभु यीशु मसीह के मुक्तिकार्य पर भी प्रश्न नहीं उठ सकता है। अय्यूब ने कहा – 19:25, “मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है। और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।” मैं भी आज यह कह सकता हूँ क्योंकि वह परमेश्वर के दाहिनी ओर उपस्थित है। वह एक दिन इस पृथ्वी पर भी था। सच तो यह है कि एक दिन वह क्रूस पर चढ़ गया कि हमें पापों से छुड़ा ले। वह सक्षम एवं योग्य है। कहा गया है परमेश्वर ने उसे बहुत ऊँचा स्थान दिया और सब नामों में बड़ा नाम दिया और एक दिन हर एक जीभ उसका अंगीकार करेगी और प्रत्येक घुटना उसके सम्मुख झुकेगा। (फिलिप्पियों 2:9-11) वह मुक्ति दिलाने में सक्षम है और क्या मैं यह कहूँ? वह आपको मुक्ति दिलाने में भी सक्षम है। परन्तु प्रश्न यह है, “क्या उसने आपको छुड़ा लिया है? वह तो चाहता है और करेगा भी यदि आप उसके पास आ जाएँ।”